

देखि सखी आज साईं सजण जो समाज सुखु  
 देव जन मुनिजन सबहूं ते न्यारो है॥  
 प्रेम की बहारी छाईं मो पै बरनी न जाई  
 रीधो रघुराई जीअ प्राणनि ते प्यारो है॥  
 सतिसंग की नदी बहे नर नारी सुख लहे  
 रहस्यनि जी बातें कहे रस को पसारो है॥  
 हरीनाम रट लागी प्रेम रस मति पागी  
 सति संग की जोति जागी भयो उज्यारो है॥  
 गरीबी की गंगा आई शील सरसुती छाई  
 कीरति कलिंद जाई त्रवेणी निजारो है॥  
 हर्ष को दिन रैन हर्ष को मन चैन  
 हर्ष सों भरे बैन हर्ष हाकारो है॥  
 मैगसि चंद्र मनठारो सति संग सोभारो साईं  
 मीरपुर वारो साईं साहिबु हमारो है॥